International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 7 Ser. I || July. 2021 || PP. 101-106

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषा कौशलो का अध्ययन

पंकज प्रकाश
अस्सिटेंट प्रोफेसर
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कॉलेज अनूपशहर

शोध सारांश:- अनेकता में एकता वाले हमारे देश अनेक भाषाएँ बोली और लिखी जाती है किन्तु हिन्दी जहाँ हमारे देश की राष्ट्रभाषा एवं सम्पर्क भाषा है वहीं उत्तर भारत में अधिकतर लोगो की यह मातृभाषा भी है किन्तु दुर्भाग्य यह कि इतना सब होते हुए भी हिन्दी पठन में लगभग सभी स्तरो पर विधार्थी अनेक त्रुटियां करते है और इसमे निश्चित हीं शिक्षा का स्तर भी प्रभावित होता है त्रुटियों से हमारा आशय क्या है, इसे जान लेना आवश्यक है वस्तुस्थिति यह है कि किसी समय विशेष में जन-जन में प्रचारित भाषा के साथ-साथ एक औपचारिक भाषा भी होती है जो स्थानीय, भौगोलिक एवं अन्य प्रभावो से निरापद सभी स्थानों में एकरुपता लिए होती है यही शिक्षण का माध्यम होता है इसी में पाठ्य-पुस्तकें लिखी जाती है तथा यही भाषा भिन्न-भिन्न स्थानों पर रहने वाले में लिखित एवं मौखिक रूप से सम्पर्क सूत्र का कार्य करती है।

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियो द्वारा हिन्दी पठन-पाठन मे होने वाली त्रुटियों का अध्ययन कक्षा 6 के छात्र-छात्रओ पर किया गया था। जिसका उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर पठन कौशलो में सुधार की आशा करते हुए किया था। प्रस्तुत अध्ययन बुलंदशहर जिले के कुछ विद्यालयों तक हीं सीमित रहा जिसमे अध्ययन हेतु छोटे न्यादर्श को लिया गया था परीक्षण में केबल भाषा सम्बन्धी कौशलो के अंतर्गत केवल पठन कौशल को लिया गया था। भाषा कौशल के विकास पर अन्य कारको जैसे सामाजिक, आर्थिक स्तर आदि को नियंत्रित किया गया है यह नियंत्रण एक हीं सामाजिक आर्थिक परिवेश के विद्यालयों का चयन करके किया गया था। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरणो का प्रयोग किया था। प्राप्त परिणाम से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लिंग भेद का भाषा पर प्रभाव नही होता है। हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग एवं उसे लोकप्रिये बनाने के लिए केवल शिक्षक का हीं नही परन्तु प्रशासको को भी निबंध लेखन, कहानी लेखन प्रतियोगिताओं एवं भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था करके विद्यार्थियों की लेखन एवं पठन समंधी आशुधियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

Keywords: - प्राथमिक स्तर, भाषा कौशल

प्रस्तावना:- भाषा एक सामाजिक व्यवहार है। मानव प्राणियों में भावाभिव्यक्ति और विचार सम्प्रेषण का यह एक सशक्त माध्यम है इसलिए जीवन में भाषा के ज्ञान के महत्व को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जाता है। वस्तुत: देखा जाये तो मनुष्य की समुचे सांस्कृति गरिमा, सामाजिक श्रेष्ठता, बोद्धिक सौष्ठव और वैचारिक गंभीरता का मूल आधार उसकी भाषा शक्ति है। वेदों में लिखा है कि यदि भाषा का प्रकाश न हो तो मानव का संसार अंधकारमय होता अथवा चारों तरफ अविधा और अज्ञान का तिमिर तिमिर हीं होता। भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है जिसका अर्थ है "व्यक्तवानी अर्थात जिसमे वर्णों का स्पष्ट उच्चारण होता है।" भाषा के अर्थ को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित परिभाषाएं दी गई है -

महर्षि पतंजलि- "भाषा वह व्यापार है जिसे हम वर्णात्मक या व्यक्त शब्दो द्वारा विचारों को प्रकट करते है।"

प्लेटो- " विचार आत्मा की मूक या अधवण्यात्मक

बातचीत है पर वाही जब ध्वण्यात्मक होकर होंठो पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है।

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में भाषा का इतना हाथ है कि भाषा की कहानी को सभ्यता की कहानी कहा जाता है। मानव बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास से साधन के रूप में किस हद तक करता है शिक्षा के क्षेत्र में भाषा व्यक्तित्व के विकास में अत्यंत सहायक है।

डा. कामिल बुल्के का कथन है- "हिन्दी की प्रतिष्ठा का रचनात्मक पहलु अर्थात शुद्ध परिनिष्ठित हिन्दी का अभियान अधिक महत्व रखता है तथा देश में भाषा भाषियों का प्रतिशत सर्वाधिक अर्थात 48 प्रतिशत और अन्य भाषा 52 प्रतिशत के अंतर्गत आती है।"

हिन्दी ध्वण्यात्मक भाषा है हिन्दी ध्वनियों की सबसे बड़ी विशेषता जो उसे वैज्ञानिकता प्रदान करती है, वह है उसका लेखनुकूल उच्चारण उसमे वर्ण का नाम एवं उच्चारित ध्वनि एक हीं है अर्थात हिन्दी में जो लिखा जाता है वो हीं बोला जाता है। सामान्य रूप से स्वीकृत भाषा कौशल हिन्दी भाषा के संदर्भ में लागू है Sustainable कौशलो को निम्नलिखित रूप में स्वीकृत किया गया है।।

अर्थग्रहण सम्बन्धी	**अभिव्यक्ति सम्बन्धी**
क. सुनना	**क**. बोलना
ख. पढ़ना	**ख**. लिखना

भाषा कौशलो का शिक्षण तथा अधिगम निम्नलिखित स्तरो पर किया जाता है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी	**अभिव्यक्ति सम्बन्धी**
क. सूचनात्मक	**क**. प्रत्यास्मरणात्मक
ख. व्याख्यात्मक	**ख**. रचनात्मक
ग. सृजनात्मक	**ग**. सृजनात्मक

अत: कहा जा सकता है भाषा व्यवहारगत है जिसमे चार कौशल सुनना, लिखना, बोलना, व पढना आता है वस्तुत: Sustainable चारो कौशलो में दक्षता प्राप्त करना ही भाषा- शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है; किन्तु ये चारो कौशल अपने में तब तक पुरा नही माने जा सकते जब तक कि शैक्षिक दृष्टि सें चारो कौशलो को सही से परिभाषित ना किया जाये । उदाहरण के लिए जब हम " सुनना कौशल" की बात करते है तो उसका अर्थ केवल सुनना नही अपितु सुनी हुई बात को सही रूप में समझना भी है। यही बात "पठन कौशल" के साथ भी लागू होती है यादी कोई लेख या कहानी शब्दो को जोड़कर पढ़ ली गई और उसका पाठक उसका "अर्थ" नही समझ पाया अथवा उसने अर्थ ग्रहण करने का प्रयास नही किया तो उसे केवक यांत्रिक पाठन हीं कहा जा सकता है।

शोध-सहित्य सर्वेक्षण:- अनुसंधान कार्य के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना अति आवश्यक है। सम्बन्धित साहित्य से तातपर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बद्ध उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधान कर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आए है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते गुड, बार तथा स्केटस (1959) कहते है।

"एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है।"

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली भांती अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान से प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य को, पुनर्निरीक्षण शब्द को, इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार:- "व्यवहारिक रूप से सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तक और पुस्तकालय में मिल सकता है। ज्ञान के विस्तृत भण्डार 7में उसका योगदान प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किये गए प्रयासों की सफलता को संभव बनाता है।"

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्तवपूर्ण कदम है। पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। समस्या से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

पठन विषय पर हुये शोध कार्य का विवरण:-

1. राव (1986) का शालेय छात्रों में पठन् अयोग्यता कि प्रकृति और विस्तार नामक विषय पर शोध कार्य
2. अग्रवाल(1981) का ज्ञानात्मक एवं अज्ञानात्मक कारणों में पठन योग्यता में सम्बन्ध का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य
3. बोरा ऐन० ए० (1988) का पठन बोध का मनोवैज्ञानिक प्रभाव से सहसम्बन्ध का अध्ययन नामक विषय पर शोध कार्य
4. सुब्रमण्यम (1986) का प्राथमिक शाला के बच्चो के पठन बोध से कुछ सहसम्बंध् नामक विषय पर शोध कार्य
5. नीलिमा द्विवेदी (2013) का प्राथमिक स्तर पर मौखिक वाचन एवं पठन बोध नामक विषय पर शोध कार्य

शोध उपकरण:- किसी भी कार्य को पुरा करने के लिए साधन के रूप में उपकरण का होना आवश्यक है। यह कहा जाये की उपकरण के आभाव में कोई भी शोध कार्य संभव नही है तो कोई अतिश्योक्ति नही, वस्तिवक्ता होगी इसी तथ्य को ध्यान रखते हुए शोधकर्ता ने अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु जिन उपकारणों का निर्माण किया है उसका वर्णन परिशिष्ट में किया गया है।

उपकारणों का निर्माण कक्षा 6 के विधाथिर्यो के पठन बोध तथा मौखिक पठन करते समय होने वाली त्रुटियों को ज्ञात करने के लिए कक्षा 5 के हिन्दी पाठ्यपुस्तक की विष्यवस्तु के आधार पर विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया कुल तीन अनुच्छेद इस प्रकार तैयार किये गये है जिससे मौखिक पठन के दौरान की जाने वाली भाषा की त्रुटियो, को मापा जा सकता है बिध परीक्षण के लिए प्रत्येक अनुच्छेद में 4-4प्रश्न रखे गये जिसमे दो-दो प्रश्न तथ्य परक पर आधारित है और दो-दो अनुमानिक तथ्यों पर आधारित है अंकन करने की व्यवस्था भी इस परीक्षण में सम्मिलित थी मौखिक पठन के लिए 15 मिनट का समय रखा गया किन्तु समय की पाबंदी नही रखी गई थी।

आंकड़ो का विवरण शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयों में सम्बन्धित प्राध्यापकों की सहमति एवं सहायता से प्रदत्त संकलन का कार्य आरम्भ किया। शोधकर्ता ने चयनित 4 विद्यालयों के कुल 100 विद्यार्थियों पर अपने

उपकरण का प्रशासन किया। तत्पश्चात उसका मूल्याँकन कर मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और प्राप्तांको का प्रतिशत ज्ञात किए। शोधकर्ता द्वारा परिकल्पनाओं के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में निकाले गये मध्यमान, प्रमाणिक विचलनों एवं प्रतिशतों को निम्नलिखित तालिकाओं के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

छात्रों व छात्राओं द्वारा की गयी कुल पठन त्रुटियां

			शब्द लोप	शब्द स्थापन्न	शब्द विकृति	शब्द जोड़	स्वम शुद्धि	शब्द पुनरुक्ति	कुल योग
लिंग	छात्र N=50	कुल	70	50	293	67	90	73	643
		मध्यमान	1.14	1.00	5.87	1.33	1.80	1.47	12.87
		प्र० वि०	1.64	1.46	7.21	1.40	2.43	1.81	13.94
		प्रतिशत	10.08	7.77	45.60	10.36	13.99	11.39	100
	छात्रा N=50	कुल	103	53	307	56	47	67	634
		माध्यमान	2.07	1.07	6.13	1.13	0.93	1.33	12.67
		प्र० वि०	3.75	1.39	5.80	1.55	1.10	1.50	13.14
		प्रतिशत	16.31	8.42	48.42	8.95	7.38	10.50	100
कुल विद्यार्थी N=100		कुल	173	103	600	123	137	140	1277
		माध्यमान	1.73	1.03	6	1.23	1.37	1.40	12.77
		प्र० वि०	2.86	1.40	6.43	1.45	1.90	1.63	13.16
		प्रतिशत	13.58	8.09	4.7	9.66	10.70	10.97	100

कुंजी

N= कुल संख्या

प्र० वि०= प्रमाणिक विचलन

परिणाम:- 0.05 स्तर पर प्राप्त मान टी सारणी के मान 1.98से कम है अत: मान सार्थक नही आया । ऐसी स्थिति में शून्य परिकलना को अस्वीकार किया जायेगा, जिसका अर्थ कि मौखिक पठन के समय छात्र/छात्राओं के मध्य सार्थक अंतर नही है।

शोध निष्कर्ष:- किसी भी शोध कार्य को करने के पश्चात शोध करता का मुख्य उद्देश्य निष्कर्ष निकलना होता है प्रस्तुत शोध कार्य में विश्लेषण तथा विवेचना करने के उपरांत छात्रों तथा छात्राओं द्वारा पठन् के समय की जाने वाली पठान त्रुटियों का विश्लेषण करने के उपरांत उनसे प्राप्त निष्कर्षों को निम्नलिखित बिन्दुओ के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

क.) छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई शब्द लोप सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है।

ख. छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई स्वयं सुधार सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है

ग.) छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई शब्द जोड़ सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है

घ.) छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई शब्द स्थापन्न सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है

ङ.) छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई शब्द विकृति सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है

च.) छात्र ओर छात्राओं द्वारा पठन् के समय की गई पुनरुक्ति सम्बन्धी त्रुटियों में कोई सार्थक अंतर नही है

शोध की शैक्षिक उपयोगिता:- शिक्षा का सम्पूर्ण कार्यक्रम भाषा के बल पर ही चलता है। अतः सम्पूर्ण शिक्षा-क्रम में भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सभी विषयों के शिक्षण का मूल साधन भाषा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन को शैक्षिक दृष्टि से बहुत महत्ता है। यह सत्य है कि प्राथमिक स्तर पर इन विद्यार्थियों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी है और भविष्य में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही होगा। ऐसी अवस्था में भाषा पर अधिकार न होने से छात्र - छात्राऐं शिक्षा में पूरी तरह सफलता प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि त्रुटियों में सुधार हेतु वृहद स्तर पर प्रयास किये जायें जिससे ये छात्र-छात्राऐं हिन्दी भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों में भी पारंगत हो सके। इस अध्ययन द्वारा पठन त्रुटियों को कम करके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाया जा सकेगा। इस शोध कार्य का लाभ वृहद् समाज का हो सकेगा। अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली पठन सम्बन्धी त्रुटियों को जानने हेतु सक्रिय रहेगा व त्रुटियों के निदान हेतु उपाय करेगा।

सुझाव:- हिन्दी भाष अपनी एकरूपता के लिए प्रशिद्ध है और इसमे जैसा बोला जाता है बैसा हीं लिखा जाता है इसलिए पठन का इस भाषा में अत्यधिक महत्व है। अत: पठन में होने वाली त्रुटितों के निराकरण हेतु हमने सुझावो को दो भागो में विभक्त किया है -

क. अध्यापको के लिए सुझाव

ख. प्रशासको के लिए सुझाव

क.अध्यापको के लिए सुझाव -

1- भाषा अध्यापको से यह अपेक्षा की जाती है कि वो अपने उच्चारण में स्थानीयता ना आने दे , क्योकि जब धवनियों का यथावत उच्चारण होगा तो ऐसा कोई धारण नही की पठन की शुद्धता में बाधा आये ।

2-अध्यापको को ऐसे विद्याथियों की अनुकर्मिनिका तैयार कर लेनी चाहिए जो पठान समंधी अनेक त्रुटि करते हॉ फिर उनके सुधार हेतु विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

3- अध्यापको को पढ़ाते और लिखाते समय त्रुटियों को उसी समय सुधारना चाहिए जिससे की उनकी पुनराव्रति ना हो।

4-विध्यर्थियो को प्रति दिन श्रुतलेख लिखाया जाना चाहिए जिससे त्रुटिया दूरो सके।

5- निबंध लेखन्, कहानी लेखन प्रतियोगिताओं की व्यवस्था करके विद्यार्थियों की लेखन समंधी आशुधियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

ख.प्रशासको के लिए सुझाव-

हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग उसे लोकप्रिये बनाने के लिए केवल शिक्षक का हीं नही परन्तु प्रशासको का भी सहयोग अपेक्षित है। निम्न सुझाव इस दिशा में सहायक हो सकते है।

1- सप्ताह में अन्य विषयो की तुलना में हिन्दी अध्यापक हेतु अधिक घंटो का समय दिया जाना चाहिए।

2- हिन्दी शिक्षकों को शिक्षा की नवीन विधियों का ज्ञान कराने के लिए नवीन पाठ्यक्रम व अध्यापक प्रशिक्षण का आयोजन सरकार द्वारा ग्रीष्मकालीन या शीतकालीन अवकाश में किये जाने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तिवारी, भोलानाथ- "भाषा विज्ञान", किताब महल, इलाहाबाद, 1967
2. शास्त्री, भूदेव- "मातृभाषा का अध्ययन", लक्ष्मीनारायण प्रकाशक, आगरा, 1967
3. शर्मा आर.ए.- "शिक्षा अनुसंधान", आर. लाल प्रकाशक, मेरठ, 1978 4.
4. कौल, लोकेश - "मैथोडोलॉजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च", नई दिल्ली, 1982
5. गैरट, एच.ई.- "शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", कल्याणी पब्लिशर्स, 1969
6. जोशी, योगेश कुमार- "हिन्दी वर्तनी समस्या व समाधान", राज. बोर्ड पत्रिका, अगस्त, 1982सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
7. खत्री, किशोर- "हिन्दी भाषा अशुद्धियाँ और संशोधन", राज. बोर्ड शिक्षण पत्रिका, अप्रैल-जून, 1992
8. कृष्णानंद, रोहिणी- "अहिन्दी भाषी बच्चों के लिए प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की रूचिकर पद्धतियाँ", प्राईमरी शिक्षक, अप्रैल, 1996
9. कुमार, अनूप- "गृहभाषा और मानक भाषा : हिन्दी शिक्षण के सन्दर्भ में भारतीय आधुनिक शिक्षा", अप्रैल, 2001
10. डॉ0 पारीक, मधुसूदन- "वर्तनी सुधार में सहायक शब्द युग्म", शिविरा पत्रिका, सितम्बर, 2002
11. गुप्ता, सुशीला- "कक्षा 8 छात्रों की हिन्दी वर्तनी की त्रुटियाँ", एम.एड. राजस्थान विश्वविद्यालय, 1953
12. राठौड़ मोतीसिंह- "डिसएबिलिटिज इन हिन्दी स्पेलिंग", एम.एड.राजस्थान विश्वविद्यालय, 1966
13. आनन्द वी.एस.- "हिन्दी की वर्तनी को प्रभावित करने वाले कारकों व दिल्ली क्षेत्र के हिन्दी माध्यम के स्कूलों के कक्षा 5 के लेखन में वर्तनी